L.N. MITHILA UNIVERSITY DARBHANGA (BIHAR)
Dr. Pramod Kumar Sahu
Assitant professor.
Guest Teacher.
pramodkumar[illegible]2018@gmail.com,
MADHUBANI (BIHAR)

B.A PART- II

B.A PAPER- III

PSYCHOLOGY (Honours)

SOCIAL PSYCHOLOGY

TOPIC- principles of socialization.

समाजीकरण के नियम (principles of socialization) सामाजिक मनोवैज्ञानिक (social psychologists) तथा समाजशास्त्रियों (sociologists) ने कुछ ऐसे नियमों (principles) का वर्णन किया है जिनके द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया निर्देशित होती है। इन नियमों (principles) में निम्नांकित प्रमुख हैं।

(i) अनुपालन का नियम - (principle of conformity) इस नियम के अनुसार बालकों में समाजीकरण की प्रक्रिया अनुपालन के आधार पर होती है। जब व्यक्ति समूह दबाव (group pressure) के कारण अपने व्यवहार में परिवर्तन उस दबाव द्वारा वांछित दिशा में करता है, तो उसे अनुपालन की संज्ञा दी जाती है। फिशर (Fisher 1982) ने यह बतलाया है कि अनुपालन की भूमिका सामाजिक सीखने (social learning) में काफी होती है। यदि प्रकृति या अन्य कोई सामाजिक परिस्थिति हो व्यक्ति सामाजिक दबाव के कारण एक खास तरह के व्यवहार को करना सीखता है तथा अन्य प्रकार तरह के व्यवहार को न करना सीखता है। यह सामाजिक दबाव का प्रभाव है कि व्यक्ति अपने संस्कृति के मानकों एवं मूल्यों के अनुकूल व्यवहार करने तथा उनके प्रतिकूल व्यवहार से अपने आप को दूर रखने का प्रयास करता है। मूल्यों (values) के अनुकूल व्यवहार करने तथा उनके प्रतिकूल व्यवहार से अपने आप को दूर रखने का प्रयास करता है। (Smith 1990) तथा रॉबिन (Robin 1991) ने ज्ञात किया है कि इस नियम की भूमिका नैतिक व्यवहारों तथा प्रतिसामाजिक व्यवहारों को सीखने में विशेष रूप से बतलाया है।

(ii) पारस्परिकता का सिद्धान्त :- यह नियम भी समाजीकरण का एक प्रमुख नियम है। जैसे- कि समाजीकरण

अतः यह स्पष्ट है। इस नियम के अनुसार समाजीकरण की आधार व्यक्ति की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं एवं इच्छाओं तथा सामाजिक परिस्थितियों के बीच की गति पारस्परिक क्रिया प्रतिक्रियाएँ होती है। इस नियम के अनुसार समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसकी व्यक्ति पर तो सामाजिक नियमों, मूल्यों तथा समाजीकरण के भिन्न-भिन्न तरह के साधनों जैसे- परिवार, पड़ोसि, स्कूल-मित्र-मंडल का प्रभाव पड़ता ही है। साथ-ही साथ वह इन साधनों तथा सामाजिक मूल्यों को भी प्रभावित करता है। तथा उसमें यथावत परिवर्तन लाता है। इन परिवर्तनों से उत्पन्न नये मूल्यों एवं सामाजिक मानकों से वह पुनः प्रभावित होता है। तथा अपनी समाजीकरण की प्रक्रिया को गतिमान बनाता है। यही कारण है कि आलपोर्ट (Allport 1962) ने कहा है कि पारस्परिकता का नियम समाजीकरण की प्रक्रिया में एक तरह की गोलापन उत्पन्न करता है। जिसमें व्यक्ति समाजीकरण के साधनों एवं सामाजिक नियमों एवं मूल्यों को प्रभावित करता है। उसमें परिवर्तन लाता है और फिर उन परिवर्तनों के अनुरूप वह नये व्यवहारों को सीखता है। जिससे फिर वह सामाजिक नियमों, मूल्यों एवं समाजीकरण के साधनों को प्रभावित करता है। इस तरह से इस नियम के कारण समाजीकरण की प्रक्रिया एक चक्र के रूप में चलती रहती है।

(3) पुनर्बलन का नियम- समाजीकरण के इस नियम का प्रतिपादन व्यवहारवादियों द्वारा किया गया है। सामान्यतः पुनर्बलन का अर्थ पुरस्कार या दंड से होता है। इस नियम के अनुसार पुरस्कार धनात्मक पुनर्बलन के तथा दंड ऋणात्मक पुनर्बलन के उदाहरण है। व्यक्ति उन सामाजिक व्यवहारों को सीखता है। जिसके करने से उसमें एक तरह का पुरस्कार जैसे- सामाजिक प्रतिष्ठा, धन, सामाजिक पद आदि मिलता है। वह उन व्यवहारों को न करना सीख लेता है जिनके करने से समाज तरह-तरह के दण्ड आदि देता है। वस्तुतः इस तरह सामाजिक-सीखना-सिद्धान्तवादियों जैसे- बैण्डुरा (1977) ने सामाजिक सीखने में प्रतिनिधिक पुनर्बलन के महत्व को भी स्वीकार किया है।

तीन निश्चित प्रत्यक्षीकरण में व्यक्ति दूसरे के प्रति सामाजिक व्यवहार करने पर भी पुरस्कार पाते देखता है और तब वह भी वैसा करना सीख लेता है। निरीक्षित प्रत्यक्षीकरण - बालकों एवं वयस्कों दोनों में सामाजिक व्यवहार के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

(4) संपोषण का नियम :- इस नियम के अनुसार समाजीकरण संपोषण आधारित होता है। संपोषण से तात्पर्य सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों एवं मानकों (norms) की पूर्व पीढ़ी से आने वाली पीढ़ी तक हस्तांतरण से होता है। यही कारण है कि बच्चे अपने परिवार या संस्कृति के नियमों के अनुकूल आचरण करना तथा व्यवहार करना सीख लेते हैं तथा वे उन व्यवहारों से अपने को दूर रखना भी सीख लेते हैं जिनसे दूर रहना उन्हें माता-पिता शिक्षकों आदि द्वारा सिखलाया जाता है। (Allport 1968) के अनुसार एक संस्कृति में पले व्यक्तियों के व्यवहारों में दूसरे संस्कृति में पले व्यक्तियों के व्यवहारों की अपेक्षा भिन्नता के कई कारणों में एक कारण समाजीकरण का यह संपोषण नियम होता है।

(5) आत्मीकरण का नियम - समाजीकरण के इस नियम को केलमैन (Kelman 1961) ने एक आधारभूत नियम माना है। आत्मीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया होती है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति/समूह के व्यवहारों को किसी बाहरी दबाव जैसे डर या किसी तरह के पुरस्कार आदि के प्रलोभन के कारण नहीं बल्कि उसे अपने व्यक्तित्व का ही एक अंग मानकर स्वेच्छा से स्वीकार कर लेता है। समाज की व्यक्ति एवं व्यक्तियों या सामाजिक तत्वों से वह आत्मीकरण स्थापित कर लेता है, जिन्हें वह अपने से अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान समझता है। आत्मीकरण स्थापित हो जाने पर व्यक्ति ऐसे व्यक्तियों के व्यवहारों को सीख लेता है और उसी तरह का व्यवहार करना प्रारम्भ कर देता है। अतः समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होती है।

(vi) आत्म-मूल्यांकन का नियम - इस नियम के अनुसार व्यक्ति अपने साथ किए गये व्यवहारों का मूल्यांकन किसी सामाजिक संदर्भ में करता है। वह इस तरह का मूल्यांकन कर यह निश्चित करने का कोशिश करता है कि उसके साथ किए गए व्यवहार कहाँ तक सामाजिक उम्मीदों के अनुरूप था। इस तरह का आत्म-मूल्यांकन बैरोन तथा बर्न (Baron & Byrne 1982) के अनुसार, इस तरह की प्रवृत्ति का कार्य करता है तथा सामाजिक व्यवहार को सीखने तथा असामाजिक व्यवहार से बचने का प्रेरणा देता है जिसे व्यक्ति आत्म-मूल्यांकन करके पाता है।

(vii) समरूपता का नियम - समाजीकरण के इस नियम पर मैक्डूगल तथा (McDougall) ने अधिक बल डाला है। इस नियम के अनुसार व्यक्ति कैसे सामाजिक व्यवहार को जल्द सीख लेता है। जिसे सीखने का तीव्र आवश्यकता वह महसूस करता है। क्योंकि ऐसी आवश्यकता उसके भीतर संतुलन की स्थिति को चुनौती देता है। जिस से उसका समरूपता में एक तरह का असंतुलन पैदा हो जाता है। ऐसे व्यवहारों को सीखकर व्यक्ति अपनी समरूपता बनाये रखता है। तथा इस तरह से व्यक्ति धीरे धीरे समाजीकृत हो जाता जाता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Date - 21/08/2020.
Sub - Psychology

Scanned with CamScanner